जिम्मेदार व्यक्ति : एक जुनूनी मुख्य अध्यापक की कहानी

मोहम्मद ज़फर



शिक्षकों की भूमिका के बारे में एन.सी.एफ. 2005 का कहना है कि शिक्षक को विद्यार्थियों के अधिगम और साझेदारी के लिए एक स्वस्थ स्थान प्रदान करना चाहिए, उनकी समस्याओं को समझना चाहिए, उन्हें विभिन्न तरीकों से समर्थन देना चाहिए और उन्हें अभिव्यक्त करने, आनन्द लेने और सीखने के लिए मुक्त स्थान मुहैया कराना चाहिए। विभिन्न विचारकों और शिक्षाविदों का मानना है कि संसाधनों और शिक्षण अधिगम सामग्री के स्वस्थ वातावरण के साथ-साथ अगर विद्यालय का वातावरण स्वतंत्र और निडर हो तो सीखने का माहौल मजबूत बनता है। विद्यालय में ऐसी सभी महत्वपूर्ण स्थितियों का निर्माण करना उस विद्यालय के सभी शिक्षकों का उत्तरदायित्व है और इस सम्बन्ध में मुख्य अध्यापक की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि वह पूरे विद्यालय के लिए एक सकारात्मक रास्ता बना सकता/ती है। मैं जिस ब्लॉक में काम करता हूँ वहाँ के एक विद्यालय से हाल ही में एक कर्मठ व ऊर्जस्वी मुख्य अध्यापक सेवानिवृत्त हुए और अब सिर्फ मैं ही नहीं वरन वे सारे लोग जो उन्हें जानते हैं, उनकी कमी महसूस कर रहे हैं। यह कमी न केवल उस विद्यालय में बल्कि उन सभी बैठकों व मंचों महसूस की जा रही है जहाँ वे बहुत सक्रिय और मुखर थे। श्री सत्यपाल जी उच्च प्राथमिक विद्यालय, पुरोला ब्लॉक उत्तरकाशी के सुनाली में मुख्य अध्यापक के रूप में कार्य करते थे। इस विद्यालय से पहले भी जहाँ कहीं भी उन्होंने कार्य किया वहाँ उन्होंने समुदाय के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाए और उनके विदाई समारोह ने सुनाली गाँव के साथ उनके सम्बन्धों को भी साबित कर दिया।

मैं उनसे पहली बार सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के एक सत्र में मिला। वे उस उम्र में भी (उनके सेवानिवृत्त होने में दो साल बाकी थे) बड़ी सक्रियता के साथ कार्यक्रम में भाग ले रहे थे। उस सत्र की आवश्यकता पर आधारित एक लघु नाटक में उन्होंने अभिनय भी किया। चर्चाओं में भी वे सभी महत्वपूर्ण इनपुटों के बारे में बहुत मुखर थे। दोपहर के भोजन के समय मैंने उनसे बातचीत की तो पाया कि वे बेहद दिलचस्प व्यक्ति थे। वे विद्यालय में शिक्षण अधिगम सम्बन्धी समस्याओं और सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता के बारे में चर्चा कर रहे थे। जब किशोरावस्था की समस्या पर चर्चा हुई तो उन्होंने कहा कि हमें विद्यार्थियों के साथ किशोरावस्था के मुद्दों पर चर्चा करनी चाहिए क्योंकि इस अवस्था में उनकी देखभाल महत्वपूर्ण तरीके से की जानी चाहिए। हमें उनके साथ शारीरिक परिवर्तनों की बात करनी चाहिए, हमें लड़के-लड़कियों को मिलने देना चाहिए ताकि वे अच्छे साथी बन सकें, नहीं तो यह उम्र किशोर विद्यार्थियों के लिए अनेक मानसिक समस्याएँ पैदा कर देती है।

कुछ महीनों बाद मुझे उनके विद्यालय में जाने का मौका मिला। वैसे तो वह विद्यालय भी किसी अन्य विद्यालय की तरह सामान्य ही दिख रहा था, लेकिन वहाँ के विद्यार्थियों से बातचीत करने पर लगा कि वे काफी आदरपूर्ण और शिक्षा सम्बन्धी बातों में रुचि लेने वाले हैं तथा परस्पर बातचीत करने में भी अच्छे हैं। उनका मुक्त व्यवहार दिखा रहा था कि उनके शिक्षकों ने उन्हें कठोर अनुशासन के जाल में फँसा कर नहीं रखा है। उस दिन मैं विद्यार्थियों के साथ अम्लीय और क्षारकीय पदार्थों के लिटमस पेपर परीक्षण के बारे में चर्चा कर रहा था। मुख्य अध्यापक होने के नाते उन्होंने हर कदम पर मेरी मदद की, अल्मारी से लिटमस पेपर निकालकर लाए, बच्चों के साथ खड़े रहे और जब बच्चे लिटमस पेपर परीक्षण कर रहे थे तो वे उनकी प्रशंसा करते रहे, उन्हें प्रेरित करते रहे। उन्होंने मुझे बहुत सारा लिटमस पेपर दिया और कहा, "सर, विद्यार्थियों को परीक्षण के लिए अधिक से अधिक चीजें दीजिए। हमारे पास बहुत सारा लिटमस पेपर है जो केवल विद्यार्थियों के लिए है और यह अच्छी बात है कि वे इसका उपयोग कर रहे हैं।"



अपने विदाई समारोह वाले दिन श्री सत्यपाल जी अपनी जीवन-संगिनी श्रीमती शिमला देवी के साथ

वे हमेशा विद्यालय की सभी गतिविधियों में स्वेच्छा से भाग लेते थे। जैसे विषय से सम्बन्धित कोई क्रियाकलाप या फिर कोई अन्य कार्यक्रम जैसे गणित मेला, आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों का विदाई

समारोह आदि। जब उनकी सेवानिवृत्ति में एक साल रह गया तो उन्होंने कहा, "मैं इसे एक साल की तरह नहीं बल्कि 365 दिनों के रूप में देखता हूँ" - उनके इस वाक्य से कार्य के प्रति उनका जुनून दिखाई देता है। एक दिन मैंने देखा कि वे पी.पी.टी. बना रहे थे और उसके लिए पार्श्व स्वर तैयार कर रहे थे। यह पी.पी.टी. उन्होंने पाठ्यपुस्तक की गतिविधियों के आधार पर बनाई थी। उन्होंने सब्जियों, फलों, शरीर के अंगों आदि के चित्र इंटरनेट से लिए, एक पी.पी.टी. बनाई और फिर उसकी विषयवस्तु के मतलब को अँग्रेजी व हिन्दी में लिखा तथा पार्श्व स्वर के माध्यम से फलों के नाम अँग्रेजी व हिन्दी में समझाए। यह सिर्फ इस बात का उदाहरण है कि उन्होंने अँग्रेजी व हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के अभ्यासों, कठिन शब्दों, काल, व्याकरण आदि पर अनेक पी.पी.टी. और वीडियो बनाए। उन्होंने बताया कि वे पाठों की सामग्री को दिलचस्प तरीके से पेश करने के लिए तकनीकी का उपयोग करते हैं। प्रत्येक कक्षा इस वीडियो सत्र के लिए उस टी.वी./कम्प्यूटर कक्ष में एक पीरियड के लिए आती है। एक बार जब उनके एक सहयोगी गणित मेले का आयोजन करने में व्यस्त थे जिसमें सभी विद्यालयों के अध्यापक आमन्त्रित थे, तो उस दिन वे चन्द्रभूषण जी (गणित के अध्यापक) के साथ गणित की पहेली और शिक्षण अधिगम सामग्री बनाने के लिए चार्ट-पेपर, गत्ते और थर्माकोल काटने में लगे हुए थे। वे हमेशा अपनी टीम की सहायता करते थे जो उन्हीं की तरह ऊर्जस्वी है।

यह विद्यालय सामूहिक और सहयोगात्मक कार्य का एक सुन्दर उदाहरण है जहाँ शिक्षक और मुख्य अध्यापक एक इकाई के रूप में कार्य करते हैं ताकि विद्यार्थियों को उनकी ओर से सर्वश्रेष्ठ योगदान मिल सके। वे अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन की टी.एल.सी. सम्बन्धी कार्यक्रमों में नियमित रूप से आते, उसमें भाग लेते और हमेशा अधिक से अधिक पढ़ने और सीखने के लिए तैयार रहते। इतना ही नहीं, संकुल और शिक्षण समुदाय में हर कोई उन्हें बहुत सम्मान देता। हाल ही में उन्हें जन-गणना के बढ़िया आयोजन के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार मिला। अपने अभिप्रेरण के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि उनका विचार है कि उन्हें विद्यार्थियों के लिए सबसे अच्छा कार्य करना चाहिए क्योंकि विद्यार्थियों के कारण ही उनके पास नौकरी है और यह उनका कर्तव्य है कि वे अपना काम ईमानदारी से करें और उन विद्यार्थियों के लिए कार्य करें जिनकी पृष्ठभूमि अच्छी नहीं है।[1] छुट्टियों में भी वे अपने गृह-नगर के विद्यालयों में जाकर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के बारे में शिक्षकों के साथ चर्चा करते हैं और उन्हें प्रेरित करते हैं।

जिस दिन उनके लिए विदाई समारोह आयोजित किया गया था उस दिन मैं किसी और कार्य में व्यस्त था और यह मेरा दुर्भाग्य था कि मैं उस समारोह में नहीं जा पाया। कुछ समय बाद जब मैं विद्यालय गया तो मैंने पूछा कि अब उनकी अनुपस्थिति से सबको कैसा लग रहा है। भजन सिंह जी (सुनाली उच्च प्राथमिक विद्यालय के एक शिक्षक) ने बताया कि श्री सत्यपाल जी के साथ आठ-दस साल की यह यात्रा बहुत सहज रही क्योंकि हम उनकी उपस्थिति से आश्वस्त रहते थे कि वे सब कुछ सम्भाल लेंगे लेकिन अब उनके बिना यह सब मुश्किल लग रहा है। हमें अभी भी विश्वास नहीं हो रहा कि वे विद्यालय में नहीं हैं। भजन सिंह जी ने बताया कि वे अभी भी फाइलों और दस्तावेजों के बारे में सत्यपाल जी से पूछते हैं जो फोन पर ही हर कार्य के बारे बताते हैं और दस्तावेज खोजने में भी मदद करते हैं। वहाँ पर बैठी हुई एक मैडम ने बताया कि जब हमें किसी हार्ड कॉपी को ढूँढ़ने में बहुत दिक्कत हो रही थी तब उन्होंने अपने पेन ड्राइव (जिसमें उन्होंने कम्प्यूटर के महत्वपूर्ण फोल्डर सेव कर रखे थे) से फाइलों के एकदम सही स्थान बता दिए। ऐसा लगता है कि वे दूर रहकर भी हमारे साथ हैं और हमारी मदद कर रहे हैं।

विद्यार्थियों से उनके बारे में बात हुई तो वे बहुत भावुक हो गए। विद्यार्थियों ने बताया कि वे कभी किसी के साथ कड़ाई से बात नहीं करते थे और हमेशा समय का पाबन्द होने को कहते थे। वे खुद समय के बहुत पाबन्द थे और बारिश के मौसम में भी समय पर विद्यालय आ जाते। वे मुख्य अध्यापक थे पर हर गतिविधि में सबका साथ देते थे। एक लड़की ने कहा कि *हम उन्हें हमेशा याद रखेंगे क्योंकि वे हमारे साथ अपने ही बच्चों जैसा व्यवहार करते थे।*

दिलचस्प बात यह हुई कि जब मैं उन्हें सूक्ष्मदर्शी यन्त्र द्वारा प्याज के छिलकों की कोशिकाएँ दिखा रहा था तो वे कहने लगे कि हमने यह पहले भी देखा है। मैंने पूछा, "आपको यह किसने दिखाया?" उन्होंने कहा कि हेड सर (सत्यपाल जी ने)। यानी विज्ञान की कक्षा में विद्यार्थियों के साथ यह गतिविधि वे पहले ही कर चुके थे। वे हमेशा विद्यार्थियों को अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता देते थे। उनके सहयोगी भजन जी के अनुसार, "वे एक अलग प्रकार के इन्सान थे और हर स्थिति में शान्ति के साथ प्रतिक्रिया करना मैंने उनसे ही सीखा। फिर भी मैं कभी-कभी अपने गुस्से पर काबू नहीं रख पाता लेकिन वे हर बात और हर चर्चा में शान्त रहते, मुझे लगता है कि वे अलग प्रकार के अद्वितीय व्यक्ति थे। उनकी अनुपस्थिति से मुझे बहुत खालीपन महसूस होता है और उनके जैसा सहयोगी मिलना मुश्किल है।'' जब मैंने कुछ और विद्यार्थियों से बात की और उनसे पूछा कि सत्यपाल जी की सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें कैसा लगता है तो वे बोले कि उनकी विदाई समारोह वाले दिन वे रो दिए थे और उन्हें उनकी बहुत याद आती है। एक लड़की बोली कि वे कभी कटुता से बात नहीं करते थे और हर

[1] *उत्तराखण्ड : उम्मीद जगाते शिक्षक, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन*

मामले में हमारा साथ देते। उसने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का उदाहरण दिया जिसमें उन्होंने अपने खर्चे से विद्यार्थियों को बनावटी गहने दिलवाए और विद्यार्थियों के साथ मिलकर दूसरी सजावटी चीजें बनाई। उस ब्लॉक में लगभग सभी शिक्षक उनके बारे में और विद्यालयों के विकास में उनके योगदान के बारे में जानते हैं फिर चाहे वे उनके पिछले विद्यालय हों या सुनाली का उच्च प्राथमिक विद्यालय। उनकी पहलों ने न केवल विद्यालय को एक आकार दिया बल्कि वहाँ सहयोग, साझेदारी और खुलेपन की संस्कृति भी विकसित की।

एक आम कहावत है "जहाँ चाह, वहाँ राह" अर्थात जब हम किसी ध्येय के लिए कार्य करते हैं और ईमानदारी के साथ करते हैं तो राहें आसान हो जाती हैं और लोग भी हमारी मदद करने के लिए आगे आते हैं। इसी तरह जब सत्यपाल जी ने अपनी टीम के साथ विद्यालय का स्वस्थ वातावरण विकसित किया तो अन्य शैक्षिक अधिकारियों और टीम ने उनके कार्य का समर्थन और सराहना की। उनका कहना है, "सामुदायिक सहायता के बिना विद्यालय का विकास नहीं हो सकता और गाँव के समुदाय ने हमेशा मेरा साथ दिया है।'' उन्होंने एक उदाहरण दिया कि जब उन्होंने कम्प्यूटर के अनुप्रयोग और सीखने के कार्यक्रम के लिए सहमति दी तो उस समय विद्यालय में बिजली नहीं थी, लेकिन उन्होंने अधिकारियों को आश्वासन दिया कि वे कम्प्यूटर भेज दें, वे (सत्यपाल जी) बिजली की व्यवस्था कर लेंगे। फिर उन्होंने बिजली की समस्या हल करने के लिए गाँव के प्रधान और अन्य सदस्यों से बात की और सिर्फ एक दिन में प्रधान ने बिजली का खम्भा लगवा दिया और समुदाय ने विद्यालय को बिजली का कनेक्शन दिया और इस तरह से कम्प्यूटर पर सफलतापूर्वक कार्य होने लगा। एक बार उनके विद्यालय की प्रबन्धन समिति ने अच्छे प्रबन्धन के लिए पुरस्कार भी प्राप्त किया।

दूसरा उदाहरण विद्यालय के भवन से सम्बन्धित है जो जंगल के पास था और तेज हवा के चलने से दो बार देवदार के पेड़ भवन पर गिर पड़े थे किन्तु सौभाग्य से उस समय विद्यालय बन्द था। सत्यपाल जी और समुदाय के अनुरोध के कारण सर्व शिक्षा अभियान अधिकारी ने नए भवन के निर्माण को मंज़ूरी दी। यही नहीं, कम्प्यूटर, टेलिविजन आदि के लिए उनके आवेदन व माँग को भी पूरा किया गया। इसके अलावा उनके कार्य को अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन द्वारा भी मान्यता दी गई और उनकी यात्रा पर न केवल *उत्तराखण्ड : उम्मीद जगाते शिक्षक*-2 (अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन का एक प्रकाशन जो उत्तराखण्ड के विभिन्न जिलों में उत्साहपूर्वक काम करने वाले शिक्षकों को उजागर करता है) में एक लेख लिखा गया है वरन पूरे पुरोला गाँव, शिक्षक समुदाय और अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के सदस्यों ने उनके आदर और सम्मान में उन्हें विदाई दी। जो लोग यह आम धारणा बना लेते हैं कि सरकारी विद्यालयों और वहाँ के कर्मचारी निष्क्रिय होते हैं या उनमें जुनून की कमी होती है, सत्यपाल जी के प्रयास ऐसे लोगों के विचारों को गलत साबित करते हैं।

जैसा कि जॉन होल्ट ने अपनी पुस्तक 'अंडरअचीविंग स्कूल' में लिखा है कि शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच आदर का सम्बन्ध होना चाहिए और उन्हें खुद को व्यक्त करने का स्थान व अवसर देना चाहिए। उनके प्रयासों के कारण आज हम सुनाली उच्च प्राथमिक विद्यालय में विद्यार्थियों और स्टाफ के बीच स्वस्थ सम्बन्धों के उदाहरण देख सकते हैं। मुझे अपने विद्यालय का अनुभव है। वहाँ के प्राचार्य अक्खड़ और कठोर अनुशासन को मानने वाले थे तथा अनुशासन तोड़ने पर दण्ड देना उनकी प्राथमिकता थी। लेकिन जब मैंने सत्यपाल जी के विद्यालय का अनुशासन और विद्यार्थियों व सहकर्मियों के साथ उनका मैत्रीपूर्ण रिश्ता देखा तो मुझे पता चला कि एन.सी.एफ. 2005 में इसी तरह के अनुशासन के बारे में बताया गया है यानी अनुशासन शिक्षक एवं विद्यार्थियों दोनों के लिए आजादी, विकल्प और स्वायत्तता बढ़ाने वाला होना चाहिए। विद्यार्थियों को नियम बनाने की प्रक्रिया में शामिल करना चाहिए ताकि वे नियम के पीछे के तर्क को समझ सकें और उसके पालन की अपनी जिम्मेदारी को भी महसूस करें (एन.सी.एफ. 2005)। यहाँ उद्देश्य विद्यार्थियों को दण्ड देना नहीं है बल्कि स्व-अनुशासन द्वारा जिम्मेदार होने के बारे में स्वामित्व विकसित करना है। इसके द्वारा वे स्वशासन के लिए बनाई गई संहिता की प्रक्रिया के बारे में जानेंगे और लोकतान्त्रिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए जरूरी कौशल विकसित कर पाएँगे (एन.सी.एफ. 2005)।

गाँववालों द्वारा दी गई विदाई

हर साल वे और उनके सहयोगी चन्द्रभूषण जी और भजन जी आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों को अपने पैसों से विदाई की पार्टी देते और विद्यार्थियों के लिए दोपहर के विशेष भोजन का आयोजन करते। विद्यार्थियों और गाँववालों ने भी इस संस्कृति को बरकरार रखते हुए उनके लिए विदाई समारोह का आयोजन किया और



विदाई समारोह वाले दिन श्री सत्यपाल जी के सम्मान में उपस्थित गाँववाले

आधे से भी ज्यादा गाँव वाले उन्हें उनकी अगली यात्रा के लिए शुभकामनाएँ देने आए। जैसा कि मैंने पहले बताया, यह मेरी बदकिस्मती थी कि मैं उस समारोह में शामिल नहीं हो पाया लेकिन मेरे सहयोगी ने बताया कि गाँववालों ने ढोल और तुरही के साथ सत्यपाल जी का सम्मान किया, उन्हें उपहार दिए जैसे राजमा दाल, अपने बाग के फल आदि। उनके पूर्व सहयोगी, सुनाली प्राथमिक विद्यालय के कर्मचारी तथा कई अन्य लोग अपने प्रिय हेड साहब को शुभकामनाएँ देने के लिए एकत्र हुए। विद्यार्थी और सहकर्मी उनके साथ गुजारे हुए पलों को याद करके रोने लगे और उस भावुक घड़ी में वे खुद भी रो पड़े। विद्यार्थियों के साथ उनके सहयोगियों ने भी उन्हें भीगी आँखों से शुभकामनाएँ दीं।[2] वे अपने पीछे जिम्मेदारी, नम्रता और एकजुटता की विरासत छोड़े जा रहे थे। अब भी वे अपने गृहनगर सहारनपुर से लोगों के साथ बातें करते हैं और कार्यशालाओं तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने में रुचि दिखाते हैं। उनके जैसे लोग बिना दूसरों पर दबाव डाले ईमानदारी के साथ अपना कार्य करते हैं और उनकी ईमानदारी और जुनून के कारण दूसरे लोग भी बहुत कुछ सीखते हैं। मेरे लिए तो यह इस बात का बहुत अच्छा उदाहरण था कि बिना कठोर अनुशासन, दण्ड या शिक्षकों पर दबाव डाले कोई मुख्य अध्यापक विद्यालय और समुदाय के लिए कितना कुछ कर सकता है।

---

[2] विदाई के विवरण और चित्र देने के लिए मेरे सहयोगी अनूप दुबे का धन्यवाद

मोहम्मद ज़फर उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन की विज्ञान टीम के साथ कार्य करते हैं। उनसे mohammad.zafar@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल